Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

A–136

B.A. (Part–I) Examination, 2023

HINDI LITERATURE

Paper - I

(प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. (i) 'पद्मावती समय' किस ग्रंथ का अध्याय है ?

   (ii) 'ढोला मारु रा दूहा' का प्रमुख छंद कौनसा है ?

(iii) कबीर के काव्य की भाषा कौनसी है ?

(iv) 'विनय पत्रिका' का शाब्दिक अर्थ क्या है ?

(v) रहीम का काव्य किस प्रकृति का है ?

(vi) रसखान ने किसके प्रति भक्ति भावना प्रदर्शित की है ?

(vii) आदिकाल का नामकरण 'वीरगाथा काल' किसने किया ?

(viii) 'भक्ति' शब्द से क्या अभिप्राय है ?

(ix) ओजगुण की परिभाषा दीजिए।

(x) श्लेष अलंकार को समझाइए।

खण्ड–ब

2. बज्जिय घोर निसांन रान चौहान चहुँ दिस।

सकल सूर सामन्त, समरि बल जंत्र तस॥

उठि प्रथिराज, बाग मानो लग वीर नट।

कढत तेग मन बेग, लगत मनो बीज झट्ट घट॥

3. बाळउँ, बाबा देसड़उ, पाँणी सन्दी ताति।

पाणि केरई कारणई, प्री छंडइ अधराति॥

बाबा म देइस मारुवाँ, वर कूँआरि रहेसि।

हाथि कचोळउ, सिरि घड़उ, सींचती य मरेसि॥

4. कबीर यहु घर प्रेम का, खाला का घर नाहिं।

सीस उतारै हाथि धरै सो पैठे घर माहिं॥

प्रेम न खेतौं उपजै, प्रेम न हाटि बिकाइ।

राजा परजा जिस रुचै, सिर दे सो ले जाइ॥

5. ऐसो कौ उदार जग माहीं।

बिना सेवा जो द्रवे दीन पर, राम सरस कोउ नाहिं॥

जो गति जोग बिराग जतन करि नहिं पावत मुनि ज्ञानी।

सो गति गीध सबरी कहँ प्रभु न बहुत जिय जानी॥

जो सम्पति दस सीस अरप करि रावण सिव पहँ लीन्हीं।

सो सम्पदा विभीषण कहँ अति सकुच सहित हरि दीन्हीं॥

6. निरगुन कौन देश को बासी।

मधुकर कहि समुझाइ सौंह दै बूझति सांच न हाँसी॥

को है जनक जननि को कहियत कौन नारि को दासी।

कैसो बरन भेष है कैसो केहि रस में अभिलाषी॥

पावैगो पुनि कियो आपुनो जो रै कहैगो गाँसी।

सुनत मौन ह्वै रह्यौ ठगो-सो सूर सबै मति नासी॥

7. बसो मेरे नैनन में नंदलाल।

मोहनी मूरति, साँवरि सुरति नैना बने विसाल॥

अध सुधारस मुरली बाजति, उर बैजंती माल।

क्षुद्र घंटिका कटि-तट सोभित, नूपुर शब्द रसाल।

मीरा प्रभु संतन सुख दाई, भक्त बछल गोपाल॥

8. कदली, सीप, भुजंग मुख स्वाति एक गुन तीन।

जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन॥

कमला थिर न रहीम कह, यह जानत सब कोय।

पुरुष पुरातन की वधू, क्यों न चंचला होय॥

खण्ड–स

9. "'ढोला मारु रा दूहा' एक लोक काव्य है।" कथन को स्पष्ट कीजिए।

10. कबीर के समाज-सुधारक रूप पर प्रकाश डालिए।

11. सूरदास के वात्सल्य वर्णन का विवेचन कीजिए।

12. आदिकाल के नामकरण विषयक विभिन्न विद्वानों के मतों का उल्लेख कीजिए।